सांगठनिक प्रस्ताव

कोलकाता में 27 से 31 दिसंबर 2015 तक संपन्न
सांगठनिक प्लेनम द्वारा स्वीकृत

21वीं कांग्रेस के निर्देश के अनुसार आयोजित यह सांगठनिक प्लेनम:

संकल्प करता है

कि अपनी पार्टी की सांगठनिक सामर्थ्यों को बढ़ाया जाए तथा चुस्त-दुरुस्त किया जाए ताकि और जबर्दस्त जन-संघर्षों को छेड़ा जा सके और इस तरह हमने जो राजनीतिक-कार्यनीतिक लाइन अपनायी है उसके अनुरूप, अपनी पार्टी की स्वतंत्र शक्ति का विकास किया जा सके। इस लाइन का लक्ष्य भारतीय जनता के बीच ताकतों के संतुलन को वाम-जनवादी मोर्चे के पक्ष में मोड़ना है, जोकि जनता के जनवादी मोर्चे का और जनता की जनवादी क्रांति को सफलतापूर्वक संपन्न करने की ओर प्रगति का पूर्वाधार बनेगा।

रेखांकित करता है

कि यह जरूरी है कि हमारी सांगठनिक सामर्थ्यों का बड़े पैमाने पर विकास किया जाए ताकि इन क्रांतिकारी लक्ष्यों को हासिल किया जा सके और हमारी जनता के तमाम शोषित वर्गों को गोलबंद करने वाली मजदूर वर्ग की राजनीतिक पार्टी बनकर सामने आ सकें:

--क्योंकि विश्व पूंजीवादी संकट की वस्तुगत स्थितियां दिखाती हैं कि पूंजीवादी व्यवस्था के तहत चाहे कितने भी सुधार क्यों न किए जाएं, जनता को बढ़ते शोषण से मुक्ति नहीं मिल सकती है। यह मुक्ति तो राजनीतिक विकल्प के रूप में समाजवाद से ही मिल सकती है।

--क्योंकि हमारी पार्टी एक ऐसी राजनीतिक पार्टी है, जिसके पास एक वैकल्पिक नीतिगत खाका है, जिससे हमारी जनता अपनी अंतर्निहित संभावनाओं को हासिल कर सकती है और इसके आधार पर एक बेहतर भारत का निर्माण कर सकती है।

--क्योंकि हमारी पार्टी एक ऐसी राजनीतिक पार्टी है, जो भारतीय युवाओं के लिए एक बेहतर भविष्य की कल्पना पेश करती है। हमारी पार्टी ही है जो ऐसी वैकल्पिक नीतियां पेश करती है, जिनसे हमारे देश के संसाधनों को जुटाकर हमारे लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, अच्छा स्वास्थ्य और वहनीय रोजगार मुहैया कराया जा सकता है।

--क्योंकि हम ऐसी अविचल राजनीतिक ताकत हैं जो हमारे बहु-धार्मिक, बहु-भाषाभाषी, बहु-सांस्कृतिक तथा बहु-नृजातीय जनगण की एकता की वकालत करती है तथा सांप्रदायिक ध्रुवीकरण बढ़ाने की तमाम कोशिशों के खिलाफ संघर्ष करती है और एक घोर असहिष्णु फासीवादी 'हिंदू राष्ट्र' की अपनी परियोजना थोपने की आरएसएस/ भाजपा की साजिशों को विफल करती है।

--क्योंकि हमारी ऐसी पार्टी है जो हर रंग के आतंकवाद तथा तत्ववाद के खिलाफ सतत रूप से संघर्ष करती आयी है। बहुसं यक सांप्रदायिकता और अल्पसं यक तत्ववाद, एक दूसरे को खुराक देते हैं तथा मजबूत करते हैं।

--क्योंकि हमारी ऐसी पार्टी है जो जाति पर आधारित छुआछूत का, भेदभाव की सभी अभिव्यक्तियों का और हर प्रकार के सामाजिक उत्पीड़न का अंत करने के लिए प्रयत्नशील है।

––क्योंकि हमारी ऐसी पार्टी है जो दृढ़तापूर्वक राजनीतिक नैतिकता के सबसे ऊंचे मानदंडों पर चलती है और भ्रष्टाचार तथा नैतिक गिरावट के खिलाफ संघर्ष चलाती है।

दर्ज करता है

कि हमारे दौर की निम्न ठोस परिस्थितियों में इस संकल्प को पूरा किया जाना है:

0 राजनीतिक ताकतों का अंतर्राष्ट्रीय संतुलन प्रतिकूल है, जो सोवियत संघ के तथा पूर्वी योरप के समाजवादी निजामों के बिखरने के बाद से साम्राज्यवाद के पक्ष में झुका हुआ है।

0 अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय पूंजी के नेतृत्व में साम्राज्यवादी विश्वीकरण को सुदृढ़ करने के प्रयास जारी हैं।

0 इसके साथ-साथ क युनिस्टविरोधी, प्रगतिशीलताविरोधी विचारधारात्मक हमला सभी क्षेत्रों––राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक आदि––में चल रहा है ताकि जनता को और खासतौर पर शोषितों के बढ़ते तबकों को अराजनीतिक बनाया जा सके।

0 अनेक देशों में बढ़ता लोकप्रिय जनप्रतिरोध तो है, लेकिन वह अब तक पूंजी के शासन के खिलाफ वर्गीय हमला बोलने के जरिए, एक समाजवादी राजनीतिक विकल्प पेश करने के स्तर तक नहीं पहुंच पाया है।

0 भारतीय शासक वर्ग ने नवउदारवाद अपनाया है और इसके साथ ही भारत को, साम्राज्यवाद का अधीनस्थ सहयोगी बनाकर रख देने की कोशिशें चल रही हैं।

0 इसके चलते हमारे समाज में ढांचागत बदलाव आए हैं, जिनका अलग-अलग तबकों पर अलग-अलग तरह से असर पड़ा है, जो हमारे सांगठनिक तौर-तरीकों में बदलाव की मांग करता है ताकि वर्ग संघर्षों को तीखा किया जा सके।

0 भारत में सांप्रदायिक ताकतों का उभार हुआ है, जिन्होंने केंद्र सरकार पर कब्जा कर लिया है तथा राजसत्ता पर काबिज हो गयी हैं। ये ताकतें भारतीय संविधान के धर्मनिरपेक्ष, जनतांत्रिक मूलाधारों को कमजोर करने की और उसकी जगह पर आरएसएस की 'हिंदू राष्ट्र' की अवधारणा को बैठाने की कोशिश कर रही हैं।

0 नवउदारवादी एजेंडा का आक्रामक तरीके से आगे बढ़ाया जाना, जो भारतीय जनता का शोषण तेज कर रहा है और जिसका घोर सांप्रदायिकता तथा बढ़ती तानाशाही के साथ योग हो रहा है।

0 हमारे मजबूत आधारों पर, खासतौर पर बंगाल में, आतंक तथा दाब-धौंस की राजनीति के जरिए, दक्षिणपंथी प्रतिक्रियावादी ताकतों की गिरोहबंदी का सतत हमला और इन हमलों को विफल करने के लिए अपने सांगठनिक जीवट को मजबूत करने की जरूरत।

0 हमारी पार्टी तथा जनसंगठनों की शक्ति में अगर गिरावट न भी हो तब भी गतिरोध की स्थिति, उनकी सदस्यता की असमानता और हमारी चुनावी शक्ति में तेजी से गिरावट की हमारी सांगठनिक कमजोरी पर काबू पाना तत्काल, अत्यावश्यक हो गया है।

1978 में सलकिया में हुए हमारे पिछले सांगठनिक प्लेनम के विपरीत, जब देश में अपने राजनीतिक प्रभाव के लिहाज से हमारी पार्टी उछाल पर थी, आज हम अपने राजनीतिक प्रभाव में गिरावट की प्रतिकूल परिस्थितियों में विचार करने बैठे हैं। इन परिस्थितियों में,

तत्काल जरूरी है कि

0 एक जन लाइन अपना कर हमारी स्वतंत्र शक्ति तथा हमारी हस्तक्षेप की क्षमताओं को तेजी से बढ़ाया जाए, वामपंथी एकता को मजबूत किया जाए और वाम-जनवादी मोर्चे का गठन किया जाए, जो महज एक चुनावी मोर्चा ही

नहीं है बल्कि प्रतिक्रियावादी सत्ताधारी वर्गों को अलग-थलग करने के जरिए आर्थिक, सामाजिक तथा राजनीतिक बदलाव लाने के लिए, संघर्षशील ताकतों का गठबंधन है।

0 कारगर तरीके से संयुक्त मोर्चे की कार्यनीति को लागू किया जाए ताकि संयुक्त आंदोलनों के विकास के जरिए, एकता और संघर्ष के दुहरे काम को पूरा किया जा सके, जो कि हमें शोषित वर्ग के ऐसे हिस्सों तक पहुंचने में समर्थ बनाएगा, जो फिलहाल पूजीवादी पार्टियों के प्रभाव के दायरे में हैं।

0 राजनीतिक हालात में आ सकने वाले तेज र तार बदलावों से निपटने के लिए, खुद अपनी राजनीतिक-कार्यनीतिक लाइन के अनुरूप लचीली कार्यनीति लागू की जाए।

0 विभिन्न सामाजिक आंदोलनों, जन गोलबंदियों तथा मुद्दा-आधारित आंदोलनों के साथ, संयुक्त मंच गठित किए जाएं।

0 चुनावी कार्यनीति को, वाम-जनवादी मोर्चे की प्रधानता के अनुरूप ढाला जाए।

0 वर्गीय व जनसंगठनों को मजबूत करने के लिए:

-- जमींदार-ग्रामीण धनी गठजोड़ के खिलाफ खेत मजदूरों, गरीब किसानों, मंझले किसानों, गैर-कृषि क्षेत्र में काम करने वाले ग्रामीण मजदूरों, दस्तकारों तथा ग्रामीण गरीबों के अन्य तबकों का एक व्यापक मोर्चा खड़ा किया जाए।

--कुंजी की तरह अति-महत्वपूर्ण माने जाने वाले तथा रणनीतिक महत्व के उद्योगों में मजदूरों को संगठित किया जाए; संगठित तथा असंगठित, दोनों ही तरह के उद्योगों में ठेका मजदूरों को संगठित किया जाए; ट्रेड यूनियनों तथा युवा, महिला आदि संगठनों के साथ तालमेल के साथ, इलाका-आधारित संगठन स्थापित किए जाएं।

--बस्तियों/ इलाकों में, शहरी गरीबों को संगठित किया जाए; पेशे पर आधारित इलाका-मोहल्ला-बस्ती कमेटियों का गठन किया जाए।

--मध्य वर्ग के बीच काम, खासतौर पर विचारधारात्मक काम को मजबूत किया जाए और इसके लिए विभिन्न मंचों को कायम किया जाए जैसे नागरिक मंच, सांस्कृतिक गतिविधियों/ कार्रवाइयों को व वैज्ञानिक मानस को बढ़ावा देने के लिए मंच और उनके जीवन तथा काम से संबंधित अन्य मंच। रहवासी एसोसिएशनों, पेंशनर एसोसिएशनों तथा प्रोफेशनल निकायों में काम को मजबूत बनाया जाए।

इन लक्ष्यों को हासिल करने के लिए जरूरत है:

0 फौरन पार्टी केंद्र को मजबूत किया जाए, जिसके लिए:

--केंद्र में पोलिट ब्यूरो सदस्यों के बीच सुसंबद्धता, सामूहिक कार्य प्रणाली, व्यक्तिगत जि मेदारी तथा नियमित जांच को सुनिश्चित किया जाए।

--राज्यों के अभियानों, संघर्षों तथा आंदोलनों में, केंद्रीय नेताओं की और ज्यादा हिस्सेदारी हो।

--सांगठनिक निर्णयों पर निगरानी रहनी चाहिए और जहां भी जरूरी हो हस्तक्षेप किया जाए।

--केंद्रीय कमेटी में समय-समय पर जन-संगठनों के काम की समीक्षा की जाए।

--स्थायी आधार पर पार्टी शिक्षा की व्यवस्था हो। सभी पार्टी सदस्यों को स्वाध्याय के लिए प्रोत्साहित किया जाए। सुरजीत भवन में केंद्रीय पार्टी स्कूल स्थापित किया जाए।

--विभिन्न विभागों के लिए सुयोग्य काडर जुटाए जाएं।

--प्राथमिकतावाले राज्यों पर और ज्यादा ध्यान दिया जाए और हिंदी-भाषी राज्यों की जरूरतें फौरन पूरी की जाएं।

0 संसदीय तथा गैर-संसदीय संघर्षों का कारगर तरीके से योग स्थापित किया जाए।

0 क युनिज्म और मार्क्सवाद के खिलाफ विश्व साम्राज्यवाद, उसकी एजेंसियों तथा भारतीय प्रतिक्रियावादी ताकतों के विचारधारात्मक हमले का मुकाबला किया जाए।

0 सांप्रदायिक ताकतों के विचारधारात्मक हमले का मुकाबला करने के लिए:

--साहित्यकारों, वैज्ञानिकों, इतिहासकारों, सांस्कृतिक हस्तियों तथा बुद्धिजीवियों के अन्य हिस्सों को गोलबंद किया जाए।

--शिक्षकों तथा सामाजिक संगठनों को साथ लेकर, स्कूल-पूर्व तथा स्कूली शिक्षा के स्तर पर पहलें की जाएं। वैज्ञानिक मानस तथा धर्मनिरपेक्ष मूल्यों के प्रचार-प्रसार के लिए सामाजिक तथा सांस्कृतिक गतिविधियों के आयोजन पर विशेष ध्यान दिया जाए।

--शोषित वर्गों, दलितों तथा आदिवासियों के बीच, सांप्रदायिक प्रभाव की घुसपैठ का मुकाबला करने के लिए विशेष गतिविधियां विकसित की जाएं।

--प्रगतिशील व धर्मनिरपेक्ष मूल्यों व सांस्कृतिक उत्पादों के प्रचार-प्रसार के लिए व्यापक आधारवाले सांस्कृतिक मंचों का गठन किया जाए। ट्रेड यूनियनें तथा अन्य जनसंगठन भी सांस्कृतिक गतिविधियों का तथा अपने इलाकों में सामाजिक गतिविधियों का आयोजन करें।

--समाज सेवा की गतिविधियां आयोजित की जाएं, जैसे स्वास्थ्य केंद्र, शिक्षा के लिए कोचिंग सेंटर, वाचनालय, राहत कार्य आदि, आदि।

--जनविज्ञान तथा साक्षरता आंदोलनों को मजबूत किया जाए।

इन कामों को सफलता के साथ पूरा करने के लिए

0 पार्टी सदस्यता की गुणवत्ता में भारी सुधार के वास्ते

--भर्ती में ढील-ढ़ाल खत्म की जाए; जनसंघर्षों के बीच से लड़ाकू लोगों की पहचान की जाए और उन्हें आक्ज़िलरी ग्रुपों (ए जी) के जरिए भर्ती किया जाए; पार्टी संविधान में निर्धारित पांच मानदंडों के आधार पर पार्टी की सदस्यता का नवीकरण किया जाए।

--आक्जिलरी ग्रुपों को समुचित तरीके से चलाया जाए और उनमें मार्क्सवाद-लेनिनवाद का समुचित अध्ययन कराया जाए ताकि उ मीदवार सदस्यों के रूप में पार्टी में उनके प्रवेश के लिए जमीन तैयार की जा सके।

--सभी पार्टी सदस्यों का जन तथा वर्गीय संगठनों में हिस्सा लेना सुनिश्चित किया जाए।

--पार्टी कमेटियों के और विशेष रूप से उच्चतर स्तर की कमेटियों के वर्गीय तथा सामाजिक गठन में सुधार लाया जाए।

--महिला पार्टी सदस्यों की सं या बढ़ायी जाए ताकि अगले तीन वर्षों में इसे 25 फीसद पर ले जाने का लक्ष्य हासिल किया जा सके।

--पार्टी के कार्यक्रमों तथा गतिविधियों को युवाओं को आकर्षित करने की ओर उन्मुख करने के जरिए, पार्टी में युवाओं के प्रतिनिधित्व में बढ़ोतरी सुनिश्चित की जाए।

--युवतर साथियों की निशानदेही करने तथा उन्हें प्रमोट करने के जरिए और संबंधित साथियों के सामूहिक आकलन के आधार पर उन्हें काम सौंपा जाना सुनिश्चित करने के जरिए, समुचित कॉडर नीति लागू की जाए।

--ऐसे कार्यकर्ताओं को पार्टी होलटाइमरों के रूप में विकसित किया जाए, जो क्रांतिकारी रूपांतरण के लिए संघर्षों में विचारधारात्मक निष्ठा तथा कुर्बानी की मिसाल हों।

--पार्टी होलटाइमरों के लिए समुचित वेतन ढांचे का कड़ाई से पालन सुनिश्चित किया जाए और भुगतान की नियमितता बनाए रखी जाए।

--निर्धारित दरों के हिसाब से पार्टी लेवी का भुगतान कड़ाई से लागू कराया जाए।

--पार्टी के वित्तीय संसाधन के मु य स्रोत के रूप में नियमित रूप से जन-चंदा अभियान चलाए जाएं। सभी स्तरों पर पार्टी तथा जनसंगठनों के जमा-खर्च का हिसाब विधिवत रखा जाए।

0 *जीवंत जनवादी केंद्रीयता सुनिश्चित करने के वास्ते*

--नियमित बैठकों के साथ ब्रांचों का समुचित रूप से काम करना सुनिश्चित किया जाए। इसके लिए ब्रांच सचिवों को तैयार करने तथा प्रशिक्षित करने की जरूरत होगी। जनता के साथ जीवंत संपर्क बनाए रखने के लिए, ब्रांचों का कारगर तरीके से काम करना बहुत ही महत्वपूर्ण है।

--सभी स्तरों पर पार्टी कमेटियों के काम-काज में सुधार लाया जाए।

-- व्यक्तिगत जि मेदारी के साथ सामूहिक काम-काज और नियमित जांच-परख के सांगठनिक सिद्धांत को समग्र रूप से पार्टी में स ती से लागू किया जाए। दी गयी व्यक्तिगत जि मेदारियों की समय-समय पर समीक्षा हो।

--आलोचना तथा आत्मालोचना के हथियार को धारदार बनाया जाए।

--पार्टी में अंदरूनी जनतंत्र को मजबूत बनाया जाए। निचली इकाइयों तथा पार्टी सदस्यों की ओर से आने वाली प्रतिक्रियाओं तथा विचारों पर, नेतृत्व ध्यान दे तथा उनका प्रत्युत्तर दे।

--संघवाद, मनोगतवाद, उदारवाद तथा गुटबाजी जैसे गलत रुझानों की काट की जाए। संसदवादी भटकाव का मुकाबला किया जाए।

--हर साल सदस्यता के नवीकरण के साथ, दुरुस्तीकरण अभियान चलाया जाए तथा उसकी समीक्षा की जाए।

0 *शक्तिशाली जनसंगठनों का निर्माण करने के वास्ते*

--अपने जनसंगठनों की शक्ति तथा प्रभाव का विस्तार किया जाए।

--जनसंगठनों के संबंध में केंद्रीय कमेटी के पहले के प्रस्तावों का कड़ाई से पालन करने के जरिए, उनकी स्वतंत्र तथा जनतांत्रिक कार्यप्रणाली को और मजबूत किया जाए।

--जन-मोर्चों के अखिल भारतीय तथा राज्य केंद्रों को मजबूत किया जाए।

--जनसंगठनों की प्राथमिक इकाइयां संगठित करने तथा उन्हें सक्रिय करने पर ध्यान दिया जाए।

--जिन राज्यों में जनसंगठनों की पार्टी उपसमितियां तथा फ्रैक्शन कमेटियां नहीं हैं, अब उनका गठन किया जाए।

--इन उपसमितियों तथा फ्रैक्शन कमेटियों का समुचित तथा नियमित तरीके से काम करना सुनिश्चित किया जाए, जिसमें पार्टी के निर्माण पर ध्यान केंद्रित किया जाए।

0 *सामाजिक मुद्दे उठाने के वास्ते*

--समग्रता में पार्टी, लैंगिक दमन के खिलाफ और दलितों, आदिवासियों, विकलांगों तथा धार्मिक अल्पसं यकों के साथ भेदभाव के खिलाफ, संघर्ष की अलमबरदार बने।

--दलितों, आदिवासियों, मुस्लिम अल्पसं यकों तथा हमारी जनता के विकलांग हिस्सों के मुद्दों पर ध्यान खींचने के लिए हमने जो मंच कायम किए हैं, उनकी सक्षमता तथा कारगरता में सुधार किया जाए।

--आर्थिक शोषण तथा सामाजिक दमन के मुद्दों को साथ-साथ उठाया जाए--इन दो टांगों पर चलकर ही भारत में वर्गीय संघर्ष आगे बढ़ सकता है।

0 ***अपने प्रभाव का विस्तार करने के वास्ते***

--संगठन के लिहाज के अपेक्षाकृत कमजोर राज्यों, खासतौर पर हिंदीभाषी राज्यों में पार्टी संगठन तथा आंदोलनों को मजबूत किया जाए।

--सांस्कृतिक क्षेत्र में पहले से चल रही गतिविधियों को मजबूत करने तथा नये-नये इलाकों में सांस्कृतिक ग्रुप स्थापित करने के जरिए, इस क्षेत्र में गतिविधियों को तेज किया जाए।

--प्राथमिकतावाले राज्यों की सूची को सुधारा जाए। हरेक राज्य भी, प्राथमिकतावाले क्षेत्रों तथा मोर्चों का चयन करे और उनके विकास पर समुचित ध्यान दे।

--उच्चतर कमेटियों के मार्गदर्शन में पार्टी इकाइयों में ऐसी क्षमताओं का विकास किया जाए कि वे जनता को आंदोलित करने वाले मुद्दों पर सतत स्थानीय संघर्ष छेड़ने पर लगातार ध्यान दे सकें।

--संसदीय तथा अन्य निर्वाचित निकायों की पार्टी कमेटियों को मजबूत किया जाए ताकि उनमें कारगर हस्तक्षेप और गैर-संसदीय संघर्षों के मुद्दे निर्वाचित निकायों में उठाने के जरिए, उनमें इन संघर्षों का प्रतिबिंबित होना सुनिश्चित किया जा सके।

--नियमित रूप से पार्टी स्कूल आयोजित किए जाएं और एक केंद्रीय पाठ्यक्रम तैयार किया जाए तथा इसके साथ ही स्वाध्याय के लिए एक जरूरी पाठ्य सामग्री सूची तैयार की जाए।

--पार्टी के अखबारों तथा प्रकाशनों के प्रसार तथा गुणवत्ता में भारी सुधार किया जाए और उनके स्वरूप तथा अंतर्वस्तु को ऊपर उठाने के लिए विशेष प्रयास किए जाएं।

--पार्टी के रुख तथा विचारों के प्रभाव को कई गुना बढ़ाने के लिए सोशल मीडिया में हस्तक्षेपों के विकास पर समुचित ध्यान दिया जाए और उसके जरिए हमारे संदेश तथा विचारों को जनता के व्यापकतर हिस्से तक पहुंचाया जाए।

इसलिए, सारतः हमें करना यह है कि

0 भारतीय जनता के साथ अपने रिश्ते मजबूत बनाएं ताकि खुद को और प्रबल जन तथा वर्गीय संघर्ष छेड़ने के लिए सामर्थ्यसंपन्न बना सकें।

0 पार्टी की जनलाइन को कारगर तरीके से अपनाएं तथा लागू करें ताकि जनता के साथ जीवंत संबंध स्थापित होना सुनिश्चित किया जा सके।

0 जनता के सभी ग्रामीण शोषित तबकों की संघर्षशील एकता कायम करने के जरिए, कृषि क्रांति को आगे बढ़ाने पर ध्यान केंद्रित किया जाए, जोकि जनवादी क्रांति की धुरी है।

0 मजदूर-किसान एकता को विकसित करने के प्रयासों को मजबूत किया जाए।

0 ***मु यतः निम्नलिखित पर प्रयत्न केंद्रित हों:***

--आर्थिक व सामाजिक मुद्दों पर वर्गीय तथा जनसंघर्ष खड़े करना ताकि पार्टी के प्रभाव का विस्तार किया जा सके और वामपंथी व जनवादी ताकतों को गोलबंद किया जा सके।

--जनलाइन को अपनाना और जनता से जीवंत रिश्ते कायम करना।

--संगठन को चुस्त-दुरुस्त बनाना ताकि एक क्रांतिकारी पार्टी का निर्माण किया जा सके, जिसके सदस्यों की गुणवत्ता ऊंचे स्तर की हो।

--युवाओं को पार्टी की ओर आकर्षित करने के विशेष प्रयास करना।

--सांप्रदायिकता, नवउदारवाद तथा प्रतिक्रियावादी विचारधाराओं के खिलाफ विचारधारात्मक संघर्ष चलाना।

ये सभी काम पार्टी केंद्रीय कमेटी केंद्र से लगाकर, समयबद्ध तरीके से पूरे करने होंगे। पार्टी राज्य कमेटियों को भी इनके समयबद्ध परिपालन की योजनाओं को ठोस रूप देना होगा और एक साल में उनकी समीक्षा करनी होगी।

सी पी आइ (एम): भारतीय जनता की क्रांतिकारी पार्टी

बहरहाल, सी पी आइ (एम) की इस संकल्पना को यथार्थ में बदलने के लिए जरूरी है कि हम अपनी सांगठनिक सामर्थ्यों में भी बढ़ोतरी करें। एक क्रांतिकारी पार्टी के नाते हमें, भारत की आजादी के लिए और एक जनहितकारी समाजवादी विकल्प के लिए, क युनिस्ट पार्टी के संघर्षों की समृद्ध थाती विरासत में मिली है। अंतर्राष्ट्रीय व घरेलू क्रांतिकारी आंदोलनों में तमाम विचारधारात्मक तथा सांगठनिक भटकावों के खिलाफ संघर्षों में सफलतापूर्वक जीत की थाती भी हमें विरासत में मिली है।

तमाम मार्क्सवादविरोधी विचारधाराओं का मार्क्सवाद-लेनिनवाद की क्रांतिकारी अंतर्वस्तु पर कायम रहते हुए और क युनिस्ट आंदोलन में वामपंथी संकीर्णतावाद तथा दक्षिणपंथी संशोधनवाद का मुकाबला करते हुए, सी पी आइ (एम), अपने नेतृत्व में चलने वाले जनता के संघर्षों के बल पर, भारत की सबसे बड़ी क युनिस्ट ताकत बनकर सामने आयी है। यह मुकाम भारी कुर्बानियों और हमारे हजारों कामरेडों की शहादत के बल पर हासिल हुआ है।

जब तक तमाम शोषित वर्गों की जनता की विराट सं या तमाम शोषक सत्ताधारी वर्गों के खिलाफ बगावत करने के लिए उठकर खड़ी नहीं होती है, कोई सामाजिक रूपांतरण संभव नहीं है, वास्तव में उसकी कल्पना तक नहीं की जा सकती है। अंतिम विश्लेषण में जनता ही इतिहास रचती है। क्रांतिकारी इतिहास भी इसका अपवाद नहीं है। एक क्रांतिकारी पार्टी के नाते सी पी आइ (एम) को, इस जनउभार का अगुआ बनकर सामने आना चाहिए। यही हमारा ऐतिहासिक दायित्व है।

आइए, इस प्लेनम में हम इस जि मेदारी को पूरा करने की ओर बढ़ने के अपने संकल्प को दोगुना कर के दुहराएं!

एक अखिल भारतीय जनाधारवाली और मजबूत सी पी आइ (एम) की ओर बढ़ें!

एक जनलाइन वाली क्रांतिकारी पार्टी की ओर बढ़ें!